चाहत

हर सुबह इस दिल को समझाता हूँ,
की ना चाहे तुम्हे !

हर शाम ये सोच कर रह जाता हूँ,
के शायद ये कम्बख्त,
कल मेरी सुने !

- राजीव नंदा